29.4.24

Pg 1 5+

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-५ 'तीन प्रश्न')
लेखक - लियो टॉलस्टॉय
पुस्तक - नवतरंग - 7

सुप्रभात बच्चो !

पाठ-५ 'तीन प्रश्न' कक्षा-7 की पाठ्य पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-२४ पर दिया गया है।

बच्चो, यह कहानी 'तीन प्रश्न' रूस के एक प्रसिद्ध लेखक लियो टॉलस्टॉय द्वारा लिखी गई है। इस कहानी में उन्होंने सेवा भाव, उचित समय का महत्व और परोपकार का भाव रखने की शिक्षा दी है। किसी भी कार्य को करने का उचित समय क्या है? हमें किन लोगों की बात सुननी चाहिए और विश्व की सबसे उत्तम चीज क्या है? इन तीन प्रश्नों के उत्तर एक राजा ने कैसे प्राप्त किए? आइए इस कहानी में पढ़ते हैं —

एक बार एक राजा के मन में अपने तीन प्रश्नों को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। वे जानना चाहते थे कि किसी काम को शुरू करने का उचित समय कौन-सा है; किन लोगों की बात सुननी चाहिए किसकी नहीं और संसार का उत्तम पदार्थ कौन-सा है? जिससे मैं जो चाहूँ कर सकूँ। इसके लिए उन्होंने अपने राज्य में घोषणा करवा दी कि जो कोई इन प्रश्नों के उत्तर देगा उसे इनाम दिया जाएगा परंतु कोई भी व्यक्ति उन प्रश्नों के उत्तर न दे सका, जिससे राजा को संतुष्टि हो सके।

तभी राजा को पता चला कि पास के जंगल में

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

29.4.24

D. — Pg. 2 D+

कक्षा- सातवीं
सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-4 तीन प्रश्न)

एक जगत-प्रसिद्ध, बुद्धिमान साधु निवास करते हैं। राजा ने सोचा क्यों न उनके पास जाकर अपने प्रश्नों के उत्तर माँगे जाएँ! परन्तु वे साधु न किसी से मिलते थे न ही अपनी कुटिया से बाहर आते थे, वे केवल दीन-दुखियों से मिलते थे। इसलिए राजा साधारण वस्त्र पहनकर पैदल साधु की कुटिया में गए। उन्होंने वहाँ देखा कि साधु कुटिया के सामने धरती खोद रहे हैं। साधु दुबले तथा कमज़ोर थे, उन्होंने राजा को देखकर प्रणाम किया और अपना काम करने लगे। राजा ने कहा, "महाराज मैं आपसे तीन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए आया हूँ।

1. महाराज किसी काम को करने का ठीक समय किस प्रकार जान सकते हैं?
2. मुझे किन लोगों के साथ रहना चाहिए अर्थात् किन लोगों की बात सुननी चाहिए।
3. विश्व की सबसे उत्तम चीज़ कौन-सी है?

साधु ने राजा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया और अपना काम करते रहे। राजा ने साधु से कहा, "आप थक गए होंगे, लाइए फावड़ा मुझे दीजिए, मैं खुदाई करता हूँ। साधु ने फावड़ा राजा को दे दिया और आप ज़मीन पर बैठ गए। राजा दो क्यारियाँ खोदकर रुक गए और फिर अपने तीन प्रश्न दोहराए।

साधु ने राजा की बात का कोई उत्तर न दिया और फावड़ा लेने के लिए हाथ बढ़ा दिया। राजा ने फावड़ा न दिया और शाम तक काम करता रहा। फिर राजा ने साधु से कहा,

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

29.4.24

Pg. 3 B+

कक्षा - सातवीं   शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-4 तीन प्रश्न)

" मैं यहाँ अपने प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए आया हूँ, यदि आप उत्तर नहीं दे सकते तो मैं लौट जाता हूँ। तभी साधु बोले देखो कोई आ रहा है। राजा ने देखा कि कोई व्यक्ति जंगल की ओर से भागा चला आ रहा है, जिसके पेट में से खून निकल रहा है। राजा के पास पहुँचकर व्यक्ति बेसुध होकर गिर गया। राजा और साधु ने देखा उसके पेट पर बहुत बड़ा घाव है। राजा ने तुरंत घाव को पानी से धोया और उस पर अपना रुमाल बाँध दिया, जिससे घाव से खून बहना बंद हो गया। थोड़ी ही देर बाद उस घायल व्यक्ति को होश आ गया और उसने उठते ही पानी माँगा। राजा ने उसे पानी पिलाया और साधु की सहायता से उस व्यक्ति को कुटिया के अंदर ले गए। अच्छी तरह से होश में आने पर घायल व्यक्ति ने राजा से क्षमा माँगी और कहा, मुझे माफ कर दीजिए। इस पर राजा ने कहा, "आप क्षमा क्यों माँग रहे हैं? मैं तो आपको जानता भी नहीं।" उस व्यक्ति ने राजा से कहा, " आप मुझे नहीं जानते पर मैं आपको जानता हूँ। आपने मेरे भाई का धन हर लिया था, इसलिए मैंने प्रतिज्ञा की थी कि आपसे बदला लूँगा। मुझे पता था कि आप साधु से मिलकर, अकेले घर को लौटेंगे। इसलिए मैं जंगल में छिपा हुआ था, लेकिन आपके सिपाहियों ने मुझे पहचान लिया और गोली मार दी।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-4 तीन प्रश्न)

मैं भागकर यहाँ आ गया। यदि आप मेरा घाव बंद न करते तो मैं मर जाता। आपने मुझे बचाया है, इसलिए अब मैं आपका दास बनकर रहूँगा। यह बात सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ कि उसका एक घातक शत्रु सहज में ही मित्र बन गया। फिर उसने साधु से कहा- महाराज आपने मेरे प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया, अच्छा प्रणाम। अब आज्ञा दीजिए। इस पर साधु ने कहा- आपके प्रश्नों के उत्तर तो मिल चुके हैं। राजा ने विस्मित होकर पूछा, "कैसे?" साधु ने कहा- देखो, यदि तुम कल मुझ पर तरस खाकर धरती न खोदते और शीघ्र ही लौट जाते तो यह व्यक्ति तुम्हें रास्ते में कष्ट देता, तब तुम पछताते कि मैं साधु के पास ठहर क्यों नहीं गया?

* इसलिए उचित समय वह था जब तुम धरती खोद रहे थे।
* उचित मनुष्य मैं हूँ, जिसका भला करना तुम्हारा कर्त्तव्य था।
* उसके बाद जब वह व्यक्ति आया, तो उचित समय वह था, जब तुम उसका घाव बंद कर रहे थे।
* उचित मनुष्य वही था, उसके घाव को बंद करना तुम्हारा कर्तव्य था।

इस प्रकार राजन! वर्तमान काल ही उचित काल है क्योंकि वर्तमान काल पर ही हमारा अधिकार है। जो मनुष्य मिल जाए, वही उचित

(पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

29.4.24

Pg 5 B+

कक्षा-सातवीं सुमन शर्मा
विषय-हिंदी साहित्य (पाठ-4 तीन प्रश्न)

मनुष्य है। कौन जानता है पल में क्या हो जाए और कोई मिले न मिले। सबसे बड़ा कर्तव्य परोपकार है क्योंकि उपकार करने के लिए ही मनुष्य को यह जन्म मिला है।

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब मैं आपको गृहकार्य दूँगी।

गृहकार्य:— सब बच्चे पाठ के शब्दार्थ अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। संक्षेप में दिए प्रश्नोत्तर लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-5)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner